आत्मविलास

लेखक—
स्वामी आत्मानन्द मुनि

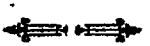

'श्रीआनन्दकुटीर-ट्रस्ट पुष्कर' की स्वीकृतिसे
श्रीश्रद्धा-साहित्य-निकेतन, कचहरी रोड,
अजमेरद्वारा प्रकाशित किया गया

द्वितीयावृत्ति
२०००

मूल्य २॥)

नोटः—

इस ग्रन्थका प्रकाशन-अधिकार श्रीआनन्द-कुटीर-ट्रस्ट पुष्करने स्वाधीन रक्खा है। इस लिये उक्त ट्रस्टकी स्वीकृति बिना कोई सज्जन किसी भाषामें इसके छपानेका साहस न करें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान.—

(१) श्रीमैनेजर, श्रद्धा-साहित्य-निकेतन,
कचहरी रोड, अजमेर

(२) भ० गणपतराम गंगाराम सर्राफ,
नया बाजार, अजमेर

नोट—यदि कोई सज्जन रेल्वे पारसलसे अधिकपुस्तकें मँगवाना चाहें तो चौथाई मूल्य पेशगी भेज देना चाहिये।

मुद्रकः—

(१) सस्ता-साहित्य प्रेस, अजमेर
(प्रथम खण्ड सम्पूर्ण तथा परिशिष्ट भाग)
(२) अग्रवाल प्रेस, अजमेर
(द्वि. ख. ७२ पृष्ट)
(३) गुरुकुल प्रेस, ब्यावर
(द्वि. खं पृ. ७३-२०८)

दो शब्द

इस ग्रन्थकी प्रथमावृत्ति एक हजाराकी संख्यामें श्रीयुत द्वारकाप्रसादजी लक्ष्मणदासजी नारनौलनिवासीने सन् १९४० में अपनी फर्म कराचीसे प्रकाशित कराई थी। उन्होंने अपनी स्वर्गीया श्रीमाताजीके स्मारकमें लोकहितार्थ दृष्टिसे इस ग्रन्थको किसी नकद मूल्यके बिना ही वितरण किया था। अर्थात् 'श्रद्धा व विचारसहित पाठ तथा यथाशक्ति धारणा' ही इसका मूल्य रखा गया था। थोड़े समयमें ही इस ग्रन्थकी सब प्रतियाँ वितरण हो गईं और जनताने आदरभावसे इसको ग्रहण किया। कुछ महानुभावोंने अपने सद्विचार भी इस ग्रन्थके विषयमें प्रकट किये, जो पाठकोंकी जानकारीके लिये अलग पृष्ठपर उद्धृत किये जाते हैं। यहाँतक कि 'सस्तु-साहित्य-वर्धक कार्यालय ट्रस्ट' अहमदाबादने गुजराती जनताके हितकी दृष्टिसे इस ग्रन्थको गुजराती भाषामें अनुवाद कराके ५ हजार प्रतिएँ प्रकाशित कीं। हर्षका विषय है कि गुजराती जनताने इस ग्रन्थको बहुत आदर दिया और उक्त ५ हजार प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक गईं। यह अनुवाद इस ग्रन्थके लेखकसे अनुमति प्राप्त किये बिना और इसके कुछ आवश्यक भाग छोड़कर प्रकाशित किया गया था।

जिज्ञासु जनताके सद्भाव और आदरको देखकर तथा इस दृष्टिसे कि भविष्यमें कोई व्यक्ति मनमाने रूपमें इस ग्रन्थका अङ्ग-भङ्ग न कर सके, इस ग्रन्थके लेखकने सन् १९४६में इस ग्रन्थका और अपनी दूसरी पुस्तक 'गीतादर्पण'का प्रकाशन अधिकार 'श्री-आनन्द-कुटीर-ट्रस्ट पुष्कर' को समर्पण कर दिया है। ट्रस्ट उस समयसे ही सचेष्ट रहा कि जहाँतक हो सके यह ग्रन्थ जनताके हाथोंमें शीघ्र पहुँचाया जाय। परन्तु देश-कालकी अनेक वर्तमान कठिनाइयोंके कारण हमें इस विषयमें इससे पहले सफलता न

मिल सकी। ब्यावरनिवासी भक्त श्रीकन्हैयालालजी गार्गीय तथा श्रीभँवरीलालजी दाणीने इस प्रकाशनकार्यमें तन-मनसे सहायता की है। और उक्त ट्रस्टके सेक्रेटरी वा० श्रीजयकृष्णजी टण्डनने सब प्रकारसे इस कार्यके सम्पादनमें व्यक्तिगत सहयोग दिया है। भ० श्रीमुनिलालजीने इस पुस्तकके प्रूफशोधनमें पूरी सहायता दी है। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित सज्जनोंने अपने ही भावसे प्रेरित हो इस ग्रन्थके प्रकाशनमें आर्थिक सहायता प्रदान की है—

(१) १०००) एक प्रेमी भक्तका गुप्त दान।
(२) ६१५) श्रीमान् लाला कन्हैयालालजी भोलानाथ फिरोजपुर
(३) ४४०) " लाला जगन्नाथजी रामजीलाल फीरोजपुर
(४) २००) " भ० बद्रीदासजी अजमेर
(५) १५०) " लाला कन्हैयालालजी जगदीशप्रसाद फीरोजपुर
(६) १००) " एक प्रेमी भक्तका गुप्त दान
(७) ५०) " भ० हरिरामजी ब्यावर

उपर्युक्त सब सज्जनोंकी सेवा और सहयोगके लिये हम आभारी हैं। ग्रन्थके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि ग्रन्थ अपने स्वरूपसे पूर्ण है। प्रकृतिराज्य प्रवृति व निवृति दो मार्गोंपर ही अवलम्बित है। हमें विश्वास है कि यह ग्रन्थ प्रत्येक मार्गावलम्बीके लिये सोपान-क्रमसे श्रेय-पथका प्रदर्शक होगा और प्राकृतिक नियमकी उत्तम शिक्षा देनेवाला प्रमाणित होगा। यदि मनमें सत्यताका आदर धारणकर इसे पढा गया तो 'वर्तमानमें हमारा चित्त किस सोपानपर है' ऐसा प्रत्येक पाठक अपने-अपने चित्तोंको इस ग्रन्थकी कसौटीपर रखकर भली-भाँति परख सकेंगे और इससे आगेके लिये उनके साधनका मार्ग दर्शन भी इस ग्रन्थसे प्राप्त हो सकेगा।

मदनमोहन वर्मा, एम० ए., राय बहादुर
(रजिस्ट्रार राजपूताना विश्वविद्यालय), प्रधान, आ. कु. ट्रू. पुष्कर

इस ग्रन्थके सम्बन्धमें

कुछ महानुभावोंके सद्भाव

माननीय श्रीमनु सूबेदार बम्बई (M. L. A Onetrel) प्रधान श्रीसस्तु-साहित्य-वर्धक-कार्यालय-ट्रस्ट अहमदाबाद, इसी ग्रन्थके गुजराती अनुवादकी भूमिकामें इस ग्रन्थका परिचय देते हुए यूँ लिखते हैं—

'आत्मविलास' अर्थात् 'संसारके खरे-खोटे खेलमें अपना आत्मा किस प्रकार रम रहा है' यह दिखलानेवाला तथा 'अज्ञानमेंसे ज्ञानमें किस प्रकार पहुँचा जाता है' यह सूचित करनेवाला, यह ग्रन्थ है। लेखककी प्रखर विद्या और ज्ञान-वत्ता तो इस पुस्तकसे ज्ञात-होगा, परन्तु उन्होंने इस पुस्तकमें तो अपने अनुभवकी कथा लिखी है। उनका गम्भीर और हृदय-स्पर्शी अध्यात्म-ज्ञान इस पुस्तकमें स्थल-स्थलपर तर आता है।

वस्तु एक ही है। देहभाव तथा जीवभावमेंसे आत्म-भाव व ब्रह्मभावमें कैसे पहुँचा जा सकता है; व्यवहारिक जीवन मेंसे आंशिक अथवा पूर्णरूपसे पारमार्थिक जीवनमें कैसे जा सकते हैं; तामसमेंसे राजसमें और राजसमेंसे सत्त्वमें कैसे जाना होता है और क्यों जाना चाहये-इत्यादि प्रश्न प्रत्येक जिज्ञासुके चित्तमें प्रतिदिन खडे होते हैं और वह इनका उत्तर बारम्बार नई-नई दृष्टिबिन्दुसे माँग रहा है। इस पुस्तकमें लेखकने ये उत्तर निश्चयात्मक रीतिसे प्रस्तुत किये हैं। भिक्षु अखण्डानन्दजीद्वारा जो ज्ञान-गंगारूप यह संस्था बहाई गई है, उसकी ओरसे ऐसे उप-योगी और पथप्रदर्शक पुस्तकको जनताके सम्मुख रजु करते हुए हमें प्रसन्नता होती है

'प्रभु सर्व शक्तिमान् है' ऐसा प्रत्येक समय और प्रत्येक विषयमें अनुभव हो सके, तभी आत्मानुभवका आरम्भ हुआ है, ऐसा मानना चाहिये।

शास्त्रार्थ महारथि पण्डितराज श्रीवेणीमधवजी शास्त्री, घटिका-शतक शतावधान संस्कृताशु कवि कविचक्रवर्त्ती कशीसे लिखते हैं.—

आपका लिखा हुआ आत्माविलास नामका दार्शनिक रहस्य प्रकाश देखकर हृदय अत्यन्त प्रसन्न हुआ। आपने बहुत परिश्रमसे इस दर्शन-शास्त्रको तैयार किया है। आपने इस पुस्तकको विद्याबलसे नहीं लिखा, किन्तु विद्या-ज्ञान दोनों बलसे लिखा है, जैसा कि तुलसीदास स्वामीका, रामायण दोनों बलसे है। लोकमान्य तिलकके प्रवृत्तिमार्गको आपने प्रमाण व युक्तियोंसे ऐसा खण्डन किया है कि अभूतपूर्व कल्पना आपने किया है। इस पुस्तकसे देशका महान् कल्याण है। व्याकरण-न्यायादि शास्त्रोंमें हम भी बहुत टीकाएँ लिख चुके हैं। लेखरहस्यका हमको अनुभव है आपका सुलेख हमको मुग्धकर आपके दर्शनकी इच्छा करा रहा है।

श्रीयुत् हनुमानप्रसादजी पोद्दार सम्पादक 'कल्याण' गोरखपुर लिखते हैं:—

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि प्रस्तुत ग्रन्थ आध्यात्मिक विषयकी खानि है। और यदि इसका विस्तृत रूपसे प्रचार किया जाय तो निश्चय ही यह पाठकोंको अत्यन्त आध्यात्मिक लाभ प्रदान करेगा।

मनकी एकाग्रताका स्वरूप और तत्सम्बन्धी विभिन्न विचार व प्रार्थनाएँ

यह पुस्तक अलग भी छपाई गई है मूल्य =)

गीता-दर्पण

(श्रीमद्भगवद् गीतापर एक अपूर्व हिन्दी-भाष्य)

लेखक स्वामी आत्मानन्द मुनि

पृष्ट संख्या ८६२, २० × ३० = १६ पेजी पक्का बाईंडिंग

मूल्य ३॥)

समालोचनाएँ

अंगरेजी समाचार-पत्रोंके मुख्य-मुख्य स्थलोंका हिन्दी अनुवाद भी दिया जाता है—

"Sind Observer Karachi, Dated 8/11/44"

Prof: R. S. Dwvedi M. A. St. Johns College, Agra says:—

I have read with great interest & profit Swami Atmánandji's Gita-Darpan in Hindi. Its merit lies in the correct exposition of the highest philosophical truths of the Gita in a language that is intelligible to the mind of a layman like myself. The treatment of the subject matter is marked by a depth of learning and & thought that is rare. Swamiji's interpretation establishes a synthesis between 'Karmyog' and Sankhyayog' that is at-once masterly & canvincing.

The most important point emphasized by Swamiji is that Karmyog taught by

Bhagwan Krishna consists in 'skilled action' (योगः कर्मसु कौशलम्)which is neither actionlessness nor action whose fruit is dedicated to God, but action that is devoid of reactions which create bondage for the doer & cause the endless chain of births and deaths. This is अकर्म or सहजकर्म. This shows how Gita is primarily a guide to right knowledge & a guide to right action only in so far as such action automatically springs from right knowledge.

Gita-Durpan thus corrects erroneous views of some of the modern commentations whose approach has been mainly intellectual & who have read in the divine words little more than the approval of their own mental inclinations tempered, as they are, by the contemporary envoirment. Any one interested in the right message of the Gita ought to read Gita-Darpan.

(१) सिंध-ओबजर्वर कराची, ता० ८-११-४४ समालोचक

पं. श्रीरामस्वरूपजी द्विवेदी, एम० ए० प्रोफेसर सेण्ट-जोन्स कालेज, आगरा

मैंने अत्यन्त रुची तथा लाभके साथ स्वामी आत्मानन्दजी-द्वारा रचित 'गीता-दर्पण'का स्वाध्याय किया है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें गीताके उच्चतम दार्शनिक तथ्योंका यथार्थ विवेचन ऐसी सरल भाषामें किया गया है, जिसे मेरे जैसा साधारण व्यक्ति भी समझ सकता है। विषयका